SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक एवं सामाजिक विचारों का अध्ययन

पवन कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
जितेन्द्र शर्मा, (Ph.D.) प्राचार्य
पं. श्यामाचरण उपाध्याय महाविद्यालय, मुरैना, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
पवन कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
जितेन्द्र शर्मा, (Ph.D.) प्राचार्य
पं. श्यामाचरण उपाध्याय महाविद्यालय,
मुरैना, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 01/03/2021
Plagiarism : 02% on 22/02/2021

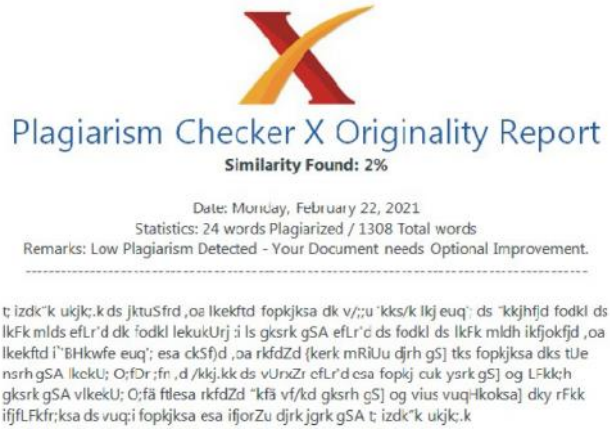
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, February 22, 2021
Statistics: 24 words Plagiarized / 1308 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

t; izdk"k ukjk;.k ds jktuSfrd ,oa lkekftd fopkjksa dk v/;;u 'kks/k lkj euq`: ds "kkjhfjd fodkl ds lkFk mlds efLr'd dk fodkl lekuUrj :i ls gksrk gSA efLr'd ds fodkl ds lkFk mldh ikfjokfjd ,oa lkekftd i`"BHkwfe euq`; esa ckSf)d ,oa rkfdZd {kerk mRiUu djrh gS] tks fopkjksa dks tUe nsrh gSA lkekU; O;fDr ;fn ,d /kkj.kk ds vUnxZr efLr'd esa fopkj cuk ysrk gS] og LFkk;h gksrk gSA vlkekU; O;fä ftlesa rkfdZd "kfä vf/kd gksrh gS] og vius vuq=Hkoksa] dky rFkk ifjfLFkfr;ksa ds vuq:i fopkjksa esa ifjorZu djrk jgrk gSA t; izdk"k ukjk;.k

शोध सार

मनुष्य के शारीरिक विकास के साथ उसके मस्तिष्क का विकास समानान्तर रूप से होता है। मस्तिष्क के विकास के साथ उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि मनुष्य में बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता उत्पन्न करती है, जो विचारों को जन्म देती है। सामान्य व्यक्ति यदि एक धारणा के अन्तर्गत मस्तिष्क में विचार बना लेता है, वह स्थायी होता है। असामान्य व्यक्ति जिसमें तार्किक शक्ति अधिक होती है, वह अपने अनुभवों, काल तथा परिस्थितियों के अनुरूप विचारों में परिवर्तन करता रहता है। जय प्रकाश नारायण उन असमान्य महान व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने एक विचाराधारा को अपने मस्तिष्क पर स्थायी नहीं होने दिया।

मुख्य शब्द

जय प्रकाश नारायण, राजनैतिक एवं सामाजिक विचार.

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जय प्रकाश नारायण का जन्म एक ऐसे वातावरण में हुआ, जब पूरा देश परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए छटपटा रहा था। उस समय बाल गंगाधर तिलक, अरविन्द, गोखले, मोहनदास करमचंद गाँधी आदि महापुरूषों अभियानों और आंदोलनों के फलस्वरूप देश का आम आदमी भी जाग चुका था और वह साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध किसी भी सीमा तक संघर्षरत था।

जय प्रकाश नारायण का जन्म कायस्थ परिवार में हुआ था। कायस्थ बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश के पढ़े–लिखे लोग हैं, जो अध्यापकी, प्रशासकीय, वकालत, डाक्टरी, व दूसरे लिखने–पढ़ने के पेशों में थे।

राजनैतिक विचार

जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचारों में सर्वत्र राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम, सामाजिक असमानता के कारण मार्क्स के साम्यवाद की स्वीकरोक्ति तथा सामाजिक–राजनैतिक समरूपता के लिए समाजवाद दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है।[1]

जय प्रकाश नारायण ने मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बाद स्वतंत्रता के आदर्श की तरह समानता के आदर्श पर अपना अधिकार मान लिया था। उनके अनुसार मात्र स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं है। इस स्वतंत्रता के साथ शोषण, भुखमरी और गरीबी से भी मुक्ति मिलना चाहिए।[2]

जय प्रकाश नारायण के प्रारम्भिक विचारों में मार्क्सवाद अत्यधिक प्रभावशाली था तथा उनका विचार था कि मात्र मार्क्सवाद ही भारतीय राजनैतिक स्वरूप को परिवर्तित कर सकता है।[3]

सन् 1932 ई. में जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचारों ने निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। इस वर्ष वह महात्मा गाँधी के आन्दोलन में सहयोगी थे, जिसके कारण उन्हें जेल में रखा गया। इस जेल यात्रा ने उनके राजनैतिक विचारों में मार्क्सवाद को और अधिक गहरा बना दिया, लेकिन उनका मार्क्सवाद विचार अधिक समय तक स्थायी नहीं रहा।

जय प्रकाश नारायण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का समाजवादी विचारधारा की और मोड़ना चाहते थे। जिसके कारण उन्होंने राष्ट्रवाद तथा समाजवाद के समन्वय पर आधारित समाजवादी पार्टी की स्थापना की।[4]

जय प्रकाश नारायण के मुख्य राजनैतिक विचार निम्नानुसार थे[5]:

- देश के आर्थिक जीवन के विकास की योजना और नियंत्रण राज्य के द्वारा होना।
- उत्पादक जनता के हाथों में समस्त राजसत्ता देना।
- विदेशी व्यापार पर राज्य का एकाधिकार।
- मूल और प्रधान उद्योगों (जैसे लोहा, रुई, जूट, रेल, जहाज, खान, बगान आदि) के अतिरिक्त बैंकों, बीमा और जनोपयोगी धंधों का समाजीकरण, इस दृष्टि से कि उत्पादन, वितरण और विनिमय के सभी साधनों का क्रमशः समाजीकरण हो जाए, यानी इनका अधिकार समाज के हाथों में आ जाए।
- राजाओं, जमींदारों और सभी शोषक वर्गों को बिना किसी मुआवजा के हटा देना।
- आर्थिक जीवन के जिन भागों का समाजीकरण नहीं हुआ है, उनके उत्पादन, वितरण और महाजनी के लिए सहयोग–समितियों का संगठन।
- राज्य द्वारा सहयोगमूलक और सामूहिक खेती के लिए प्रोत्साहन और अभ्युक्ति के प्रयत्न।
- जमीन का किसानों के बीच फिर से बंटवारा।
- राज्य द्वारा हर व्यक्ति को काम देने या उनके निर्वाह किए जाने के अधिकार की स्वीकृति।
- किसानों और मजदूरों पर जितना भी कर्ज हो, उसको हटाना।
- पेशागत आधार पर हर एक बालिग को मताधिकार।
- हर एक को उसकी जरूरत के मुताबिक मिलेगा और हर एक से उसकी योग्यता के मुताबिक काम लिया जाएगा–अंततः इसी आधार पर जीवनोपयोगी पदार्थों का वितरण और उत्पादन होना।
- राज्य द्वारा स्त्री–पुरूष के दरम्यान किसी तरह का भेद नहीं करना।
- राज्य द्वारा न किसी मजहब या धर्म का समर्थन और न मजहबों के बीच भेदभाव करना और न जाति या संप्रदाय के आधार पर किसी का भेद करना।

उपर्युक्त वर्णित कार्यक्रम के द्वारा जय प्रकाश नारायण भारत में साम्राज्यवाद के विरूद्ध समाजवादी विचारधारा से संघर्ष करना चाहते थे।

इस प्रकार जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचारों में समाजवाद के प्रवेश के बाद उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को समाजवादी विचारधारा की ओर मोड़ने का प्रयास किया, जिससे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वर्ग अत्यधिक प्रभावित हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति तक जय प्रकाश नारायण समाजवादी विचारधारा के साथ महात्मा गाँधी के अहिंसा दर्शन पर आधारित प्रत्येक आन्दोलन में वैचारिक स्तर पर सामन्जस्य बनाये रहे।

सामाजिक विचार

जय प्रकाश नारायण ने जिस प्रकार राजनैतिक विचारों में समाजवाद को प्राथमिकता प्रदान की, ठीक उसी प्रकार उन्होंने अपने सामाजिक विचारों में भी समाजवादी दृष्टिकोण को प्रमुखता प्रदान की।[6]

जय प्रकाश नारायण का मत था कि भारत का वास्तविक समाज ग्रामों में बसता है, अतः ग्राम आधारित सामाजिक व्यवस्था ही भारत के लिए कल्याणकारी है। नगरों का विकास आवश्यक है, परन्तु ग्रामों के विकास को प्राथमिकता प्रदान की जाना आवश्यक है। इतिहासकार अल्तेकर के विचार ''अति प्राचीन काल में भारत में प्रशासन की धुरी गाँव रहे हैं''[7] पर जय प्रकाश नारायण सहमति व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि इसमें सन्देह नहीं कि गाँव ही सामाजिक जीवन के केन्द्र बिन्दु और देश की अर्थव्यवस्था की प्रधान इकाई थे। राष्ट्रीय संस्कृति, समृद्धि और प्रशासन का भव्य भवन इन्हीं पर खड़ा था।[8]

जय प्रकाश नारायण का विचार था कि गाँव में ही वास्तविक समाजवाद देखा जा सकता है। गाँव में प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य व्यवस्था के अनुरूप कार्य करता है, परन्तु उनमें ऊँच–नीच की भावना नहीं होती है। भारत परम्पराओं और विश्वासों का देश है जो गाँव में ही जन्म लेती है और विकसित होती है।

जय प्रकाश नारायण के सामाजिक विचारों में महात्मा गाँधी एवं राममनोहर लोहिया के विवादों का समन्वय दिखलाई पड़ता। जब जय प्रकाश नारायण समाज में समानता की विचार करते हैं तो वह राममनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों के समीप दिखलाई पड़ते हैं[9] और जब ग्रामीण समाजवाद या अहिंसक समाज की अवधारणा को मानव समानता के लिए सबसे उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था बताते हैं तो उनके सामाजिक विचारों पर महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।[10]

जय प्रकाश नारायण के सामाजिक विचारों पर मार्क्स के वर्ग संघर्ष सिद्धान्त के भी पक्षधर थे। वह भारत में आर्थिक आधार पर वर्गरहित समाज के कल्पना करते हैं। उनका मानना था कि राष्ट्र में प्रत्येक अचल और चल सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार होना चाहिए और राज्य समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

जय प्रकाश नारायण सामाजिक परिवेश में संगठित तथा संयुक्त परिवार के पक्षधर थे। उनका मानना था कि एक परिवार जितना वृहद होगा वह उतना ही सुंस्कृत एवं नियंत्रित होगा। परिवारिक संगठनात्मक व्यवस्थाओं में वह महिलाओं को सम्मान के पक्षधर थे। यही कारण है कि उन्होंने 19वीं शताब्दी के नारी आन्दोलनों के सन्दर्भ सदैव नारी शिक्षा का पक्ष लिया। उनका मत था कि यदि नारी सुशिक्षत होगी तो वह परिवार के साथ राष्ट्र के विकास में भी योगदान देगा।

जय प्रकाश नारायण के सामाजिक विचारों में महिलाओं के लिए स्वभाविक सम्मान था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं के हिस्सेदारी को भी बल दिया।

निष्कर्ष

जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक एवं सामाजिक विचारों का अनुशीलन करने के उपरान्त हम देखते हैं कि जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचार प्रमुख रूप से तीन खण्डों में विभक्त थे – मार्क्सवाद, समाजवाद एवं गाँधी समाजवाद का समन्वय। जय प्रकाश नारायण प्रारम्भ में मार्क्स के वर्ग–संघर्ष के सिद्धान्त से प्रभावित थे और वह भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक नवीन राजनैतिक विचारधारा को स्थापित करना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने समाजवाद को सबसे उपयुक्त माना और भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए वह समाजवाद और गाँधीवाद के समन्वयक बन गये।

जय प्रकाश नारायण के सामाजिक विचारों में समान वितरण, समान अधिकार एवं समान सामाजिक आचार संहिता के पक्षधर थे। वह समाज में एक ऐसे समाज की व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जिसमें एक वर्ग से दूसरे वर्ग के मध्य बहुत बड़ा अन्तर न हो। जय प्रकाश नारायण के सामाजिक विचारों पर राममनोहर लोहिया के सामाजिक दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची

1. सेठ, अमरनाथ सेठ, *जय प्रकाश नारायण,* पृष्ठ–7।
2. शाह, कान्ति *जय प्रकाश नारायण की जीवन यात्रा,* पृष्ठ–7।
3. शाह, कान्ति शाह *जय प्रकाश नारायण की जीवन यात्रा,* पृष्ठ–7।
4. सेठ, अमरनाथ *जय प्रकाश नारायण,* पृष्ठ–11।
5. सिंह, मनोज कुमार एवं चौधरी, शैलेश कुमार *भारतीय राजनीतिक चिन्तक–जय प्रकाश नारायण नारायण,* पृष्ठ–8।
6. वही।
7. वही।
8. शाह, कान्ति *जय प्रकाश नारायण की जीवन यात्रा,* पृष्ठ–17।
9. रघुवंश, *जय प्रकाश नारायण के विचार,* पृष्ठ–31।
10. शाह, कान्ति *जय प्रकाश नारायण की जीवन यात्रा,* पृष्ठ–19।

****